हं क्लों मालारीन

ह्ली ॐ नापरांमउँ ह्रीं अ

ॐ॥ छं॥ कुँ॥ हूं फं

हनुमानचालनी

ह० तनावालान





प्रकाशक—बाबू ठाकुरप्रसाद गुप्त बुक्सेलर, बनारस। मूल्य ॥



❀ अथ ❀

हनुमानचालीसा

अथ संकटमोचन, हनुमानाष्टक, आरती बजरंग-
बलीकी, श्रीरामस्तुति, श्रीरामाष्टक
संयुक्त हनुमानचालीसा प्रारम्भः

❋ श्रीहनुमते नमः ❋

अथ हनुमान चालीसा

——:❋:——

दो०—श्रीगुरु-चरण सरोज रज,
निज मन मुकुर सुधार।
बरणौं रघुबर विमल यश,
जो दायक फल चार॥

बुद्धिहीन तनु जानिकै,
सुमिरौं पवन-कुमार ॥
बल बुधि विद्या देहु मोहिं,
हरहु कलेश विकार ॥
चौ०-जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा ।

अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महावीर विक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन वरण विराज सुवेशा ॥
कानन कुण्डल कुञ्चित केशा ॥
हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ छाजै ॥

शङ्कर सुवन केशरीनन्दन ।
तेज प्रताप महा जग वन्दन ॥
विद्यावान गुणी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लषन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियाहिं दिखावा ।

विकट रूप धरि लङ्क जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥
लाय सजीवन लषन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रीय भरत सम भाई ॥

हनुमान चालीसा ।

सहस वदन तुम्हरो यश गावैं।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।
नारद शारद सहित अहीशा॥
यम कुबेर दिग्पाल जहाँते।
कवि कोविद कहि सके कहाँते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।

राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना ।
लङ्केश्वर भय सब जग जाना ॥
युग सहस्र योजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिन पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी शरना ।
तुम रक्षक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै ।

तीनों लोक हाँक ते काँपै ॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै ।
महावीर जब नाम सुनावै ॥
नाशै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥
सङ्कट से हनुमान छोड़ावैं ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावैं ॥

सबपर राम राय सिर ताजा।
तिनके काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोइ लावै।
तासु अमित जीवन फल पावै॥
चारो युग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उँजियारा॥
साधु सन्त के तुम रखवारे।

असुर निकन्दन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस वर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ॥
सदा रहो रघुपति के दासा।
तुम्हरे भजन राम को भावै।
जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई॥
सङ्कट हरै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं।

कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
ये शत बार पाठ कर जोई ।
छूटहि बन्दि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीशा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

❋ दोहा ❋

पवन तनय सङ्कट हरन,
मंगल मूरति रूप ।
राम लषन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप ॥

❋ इति ❋



❋ अथ ❋

संकट मोचन हनुमानाष्टक

❋ मत्तगयन्द छन्द ❋

बाल समय रवि भक्षि लियो तब
तीनहुँ लोक भयो अँधियारो । ताहि
सो त्रास भयो जगको यह संकट

काहु सो जात न टारो ।। देवन आनि करी बिनती तब छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो । को नहिं जानत है जग में कपि सङ्कट मोचन नाम तिहारो ।।१।।
बालि के त्रास कपीस बसै गिरि जात महा प्रभु पंथ निहारो । चौंकि महा मुनि शाप दियो तब चाहिय कौन

बिचार बिचारो। कै द्विज रूप लिआय महाप्रभु सो तुम दास के शोक निवारो ॥ को०—२ ॥ अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो। जीवत ना बचिहो हम सो जु बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो। हेरि थके तट सिन्धु सबै तब

लाय सिया सुधि प्राण उबारो।
को०—३ ॥ रावण त्रास दई सिय को
तब राक्षसि सोकहि शोक निवारो
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय
महा रजनीचर मारो ॥ चाहत सीय
अशोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका
शोक निवारो ॥ को०—४ ॥ बाण

लग्यो उर लक्ष्मण के तब प्राण तजो सुत रावण मारो । लै गृह वैद्य सुखेन समेत तबै गिरि द्रोण सुबीर उपारो । आनसजीवन हाथ दई तब लक्ष्मण के तुम प्राण उवारो ॥को०—५॥ रावण युद्ध अजान कियो तब नागकि फाँस सबै सिर डारो । श्रीरघुनाथ समेत

सबै दल मोह भयो यह संकट भारो।। आन खगेश तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो ।।को०-६।।बन्धु समेत जबै अहिरावण लै रघुनाथ पताल सिधारो ।। देविहिं पूजि भली विधि सों बलिदेउ सबै मिलि मन्त्र विचारो। जायसहायभयो तबही अहि

रावण सैन्य समेत सँहारो ॥को०—७॥
काज किये बड़ देवन के तुम वीर
महाप्रभु देखि बिचारो । कौन सो
संकट मोर गरीब को जो तुमसों
नहिं जात है टारो ॥ वेगि हरो हनु-
मान महाप्रभु जो कछु संकट होय
हमारो ॥ को० नहिं—८ ॥

❁ दोहा ❁

लाल देह लाली लसे,
अरु धर लाल लंगूर ।
वज्र देह दानव दलन,
जय जय जय कपिशूर ।

॥ इति संकट_मोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥



❀ आरती बजरङ्गबली की ❀

आरति कीजै हनुमान ललाकी। दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी ॥
जाके बल से गिरिवर कांपै। रोग दोष भय निकट न झांपै ॥टेक॥
अञ्जनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई ॥ १ ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लङ्का जारि सिया सुधि लाये ॥ २ ॥
लङ्का ऐसे कोट समुद्र अस खाई। जात पवनसुत वार न लाई ॥३॥
लङ्का जारि असुर सब मारे। सियाराम के काज संवारे ॥ ४ ॥
लक्ष्मण मूर्छि परे धरणी पै। आनि सजीवन प्राण उबारे ॥ ५ ॥
पैठि पताल तोरि यमकातर। अहिरावण के भुजा उखारे ॥ ६ ॥
बांये भुजा सब असुर संहारे। दहिने भुजा सब सन्त उबारे ॥७॥
सुर नर मुनिजन आरती उतारे। जै जै जै हनुमानजी उचारे ॥८॥

कञ्चन थार कपूर की बाती। आरती करत अञ्जनी माई ॥९॥
जो हनुमान जीकी आरती गावै। सो बैकुण्ठ अमरपद पावै ॥१०॥
लङ्का विध्वंस किये रघुराई। तुलसीदास स्वामी कीरति गाई ॥११॥

❀ अथ श्रीराम स्तुति ❀

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजुमन हरण भव भय दारुणम्। नवकञ्ज लोचन कञ्जमुख करकञ्ज पदकञ्जारुणम ॥ कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील नीरज सुन्दरम्। पटपीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥ भजु दीन बन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश निकन्दनम्। रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द दशरथनन्दनम् ॥

सिरकीट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषणम् । आजनुभुज सरचापधर संग्रामजितखरदूषणम् ॥ इतिवदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मन रञ्जनम् । मम हृदय कंजनिवास करुकामादिखलदल गंजनम् ॥ मनजाहि राचो मिलहि सो वर सहज सुन्दर साँवरो ॥ करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥ यहि भाँति गौरि अशीष सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली । तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥

सो०—जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हर्ष न जात कहि ।
मंजुल मंगल मूल, वाम अङ्ग फरकन लगे ॥

सिया वर रामचन्द्र की जय ॥ १ ॥



छन्द--भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनिमन हारी अद्भुत रूप निहारी॥
लोचन अभिरामा तनुघनश्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषण बनमाला नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी॥
कह दुहूँ करजोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करउँ अनन्ता।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता॥
करुणा सुखसागर सब गुणआगर जेहि गावहिं श्रुतिसंता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी प्रगट भये श्रीकन्ता॥

ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रतिवेद कहै।
सो ममउर बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुतविधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै शिशुलीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना है बालक सुरभूपा।
यह चरित जो गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

॥ विश्वनाथाष्टकम् ॥

श्रीगणेशाय नमः । आदिशंभुस्वरूपमुनिवरचन्द्रशीश जटाधरं । मुंडमालविशाललोचन वाहनं वृषभध्वजम् । नाग चन्द्र त्रिशूलडमरूभस्मअङ्ग विहङ्गमम् । श्रीनीलकंठहिमाल जलधर विश्वनाथविश्वेश्वरम् ॥ १ ॥ गंगसंगप्रसंगसरिता कामदेव सुसेवितम् । नादविन्दु संयोगसाधनपंचवक्त्रत्रिलोचनम्। इन्दुविन्दुविराज शशिधरसेवितं सुरवंदितम्। श्रीनीलकंठहिमाल० ॥२॥ ज्योतिलिङ्गसुलिङ्गफणिफणादिव्यदेव सुसेवितम् । मालतीतनु पुष्पमालागंधधूपनिवेदितम् । कलश कुम्भसुकुम्भ झलकत कलशकञ्चनशोभितम् । श्रीनील-

कंठ० ॥ ३ ॥ मुकुटक्रीटसुकनककुंडलमंडितंमुनिरंजितम् । हारमुक्तना कनकरेखा रेखितं सुरसेवितम् । गंधमादनशैल आसन आसनं परकाशनम् ॥ श्रीनीलकण्ठ० ॥४॥ मे घ डंबरछत्रधारनचरनकमलविशालितम्। पुष्परथपरमदनमूरति गौरीसंग सदाशिवम् । छत्रपालसुपालभैरवकुसुमनवग्रहभूषितम् । श्रीनीलकण्ठ० ॥ ५ ॥ त्रिपुरदैत्यसुदैत्य दानव प्राप्यते फलदायकम् । रावणादशकमल मस्तक अञ्जल धरसायकम् ॥ श्रीनीलकण्ठ० ॥ ६ ॥ मथित दधि जल शेषविगलित श्रमतमेरुसुमेरुकम् । स्रवत विगलित शेष-

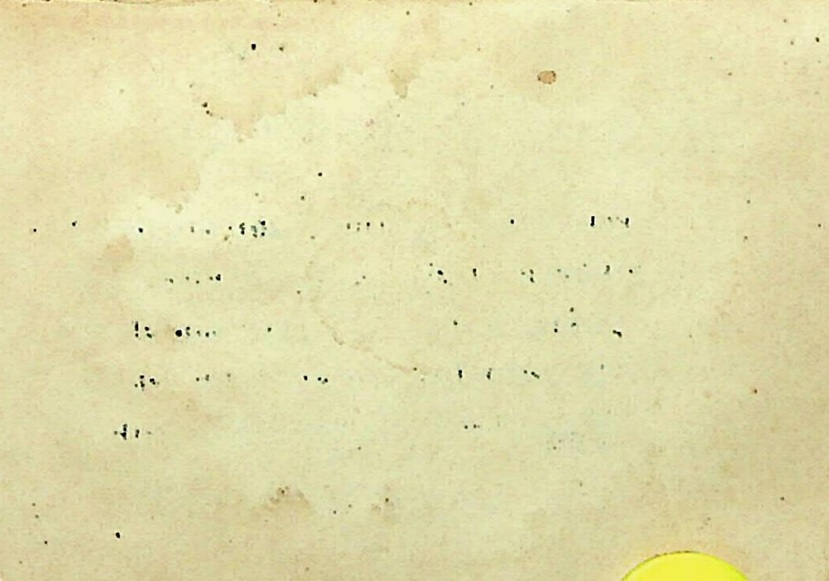
भनवतयुग्मनेत्रसुनेत्रकं। महादेवसुदेवसुरपतिसर्वदेवविश्वंभरं
श्रीनीलकण्ठ० ॥७॥ रुद्ररूपसुतेजनंकृतभद्यपानहलाहलम्।
गगनवेधितअखिलधारा आदि अन्तसमाहितम्। कामकुञ्जर
मानकेशव महाकाल विश्वेश्वरम् ॥ श्रीनीलकंठ॥८॥ ऋतु
वसन्तसुचक्रचौंदिशिप्राप्यतेफलदायकम्। पूर्वकाशीभयेवासी
मनुज मङ्गलदायकम्। अम्बिकेतटबैद्यनाथं शैलशिखर
महेश्वरम्। श्रीनीलकंठ० ॥

॥ इति विश्वेश्वराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

——

अथ श्रीरामाष्टक प्रारम्भः

हे रामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणाः केशवाः ॥ १ ॥ गोविन्दा
गरुडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवाः ॥२॥ हे कृष्ण कमलापते
यदुपते सीतापते श्रीपते ॥३॥ वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते
पाहिमाम ॥ ४ ॥ आदौ राम तपोवनादि गमनं हत्वा मृगंकांचनम्
॥ ५ ॥ वैदेही हरणं-जटायु-मरणं सुग्रीव सम्भाषणम ॥ ६ ॥ बाली
निर्दलनं समुद्र तरणं लङ्कापुरी दाहनम ॥ ७ ॥ पश्चाद्रावणकुम्भकर्ण
हननं एतद्धि रामायणम् ॥ ८ ॥



हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें—

मान्सागरी जन्म कुण्डली का		अमरकोष सम्पूर्ण गु.	१॥)
अपूर्व ग्रन्थ भा.टी. ग्लेज	६)	लघुसिद्धान्त कौमुदी	१)
लघुसंग्रह भाषा टीका	२)	रघुवंश महाकाव्य	१।)
मुहूर्त चिन्तामणि	३)	हितोपदेश मित्रलाभ	
चालीसा पाठ संग्रह	।॥)	भाषा टीका	१।)

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

बाबू ठाकुरप्रसाद गुप्त, बुकसेलर,

राजादरवाजा, ब्राञ्च-कचौड़ीगली, बनारस।



॥ ॐ ॥

हरीॐ ॥ समाप्तम

ॐ तत्सत् ॐ

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥